समावेश का सही मतलब | 'सद्भावना विद्यालय' की ओर

सन्ध्या देवी

जब भी समावेशी स्कूल की बात निकलती है, यह कई बार दोहराया जाता है कि यह एक ऐसा स्कूल होता है जहाँ विशेष ज़रूरतों वाले बच्चे, 'सामान्य रूप में विकसित होते' विद्यार्थियों के साथ पढ़ते हैं। पर क्या एक समावेशी स्कूल की पहचान यहीं तक सीमित रहनी चाहिए? उन स्कूलों का क्या जहाँ कोई विशेष ज़रूरतों वाले बच्चे मौजूद नहीं हैं, पर उन्हें भी समावेशी होने की ज़रूरत है? आइए कुछ सवाल हम अपने आप से करते हैं : क्या सुबह की सभा का नेतृत्व करने का मौक़ा स्कूल के हर एक बच्चे को मिलता है? क्या कक्षा में हर एक बच्चे को बोलने का मौक़ा मिलता है? क्या कक्षा को सजाने की ज़िम्मेदारी लड़के और लड़कियाँ बराबरी से बाँटते हैं? इन सवालों के लिए ज़्यादातर लोगों का जवाब 'न' होगा। अगर हम सब साथ मिलकर काम करें, तो हम इनमें से कई चिन्ताओं का निवारण कर सकते हैं और अपने स्कूलों को सही मायने में समावेशी बना सकते हैं।

हम अपनी कक्षाओं में अक्सर यह देखते हैं कि कुछ कार्य, विद्यार्थियों के एक समूह को सौंपकर बाक़ी विद्यार्थियों को पीछे छोड़ दिया जाता है। चाहे हमें इसका एहसास हो या नहीं लेकिन कुछ विद्यार्थियों को इस तरह बाहर रखने पर उन्हें अवसरों से वंचित कर देते हैं। हम शिक्षकों द्वारा ही विद्यार्थियों को 'स्मार्ट' और 'कमज़ोर' समूहों में बाँट दिया जाता है। हम यह भी सोचते हैं कि सिर्फ़ बुद्धिमान विद्यार्थी ही सारे कार्य कुशलतापूर्वक कर सकते हैं और जो विद्यार्थी अकादमिक तौर पर प्रवीण नहीं हैं वे अन्य कार्य करने की क्षमता भी नहीं रखते। इस सोच से उन बच्चों के साथ-साथ स्कूल का विकास भी रुक जाता है।

हम हर एक बच्चे की विशिष्टता और असाधारण कार्य करने की उनकी क्षमता को क्यों नहीं पहचान पाते? इस सवाल को ध्यान में रखकर हमने शासकीय प्राथमिक विद्यालय, गीधा (नवागढ़ ब्लॉक, जांजगीर चाम्पा ज़िला, छत्तीसगढ़) में समावेशी वातावरण बनाने की ठानी। हमारी इस मुहिम को सहयोग देने के लिए न केवल स्कूल, बल्कि पूरा समुदाय साथ आ गया। इस मुहिम के तहत हमने जो गतिविधियाँ कीं, उनका ज़िक्र नीचे किया गया है।

संविधान दिवस मनाना

हमारे स्कूल को समावेशी बनाने के लिए 'विचारों में खुले' होने की एक नींव स्थापित करना बहुत ज़रूरी था, ताकि बच्चे अपने जीवन में नए ख़्यालों के प्रति ग्रहणशील हों।

संविधान दिवस पर हमने संवैधानिक मूल्यों और अधिकारों को लिखकर दीवारों पर चिपकाया ताकि बच्चे उन्हें पढ़ने और उनके बारे में जानने के लिए उत्सुक हों। हमने संवैधानिक मूल्यों पर चर्चा की और बच्चों को अपने विचारों को साझा करने के लिए एक खुला मंच दिया।

हमने रूढ़िबद्ध धारणाओं पर चर्चा की। लड़कों व लड़कियों द्वारा किए जाने वाले काम पर भी विस्तार से अपने विचार साझा किए। पूरी चर्चा में, लगभग हर बच्चे की यही सहमति थी कि काम का विभाजन जेंडर के आधार पर नहीं होना चाहिए।

संविधान के नीति-निर्धारित नियमों की चर्चा के माध्यम से बच्चों को अपने स्कूल के नियम बनाने की आज़ादी दी गई। आपस में नियमों की चर्चा करने के बाद, बच्चों ने उन्हें लिखकर, सबके हस्ताक्षरों के साथ स्कूल की दीवार पर चिपका दिया।

सुबह की सभा में अन्तर-धार्मिक प्रार्थना शामिल की गई ताकि सारे धर्मों के प्रति आदर की भावना विकसित की जा सके। इसके अलावा बच्चों को समूहों में बाँट दिया गया जिनके ऊपर हर दिन सुबह की सभा की अगुआई करने की ज़िम्मेदारी थी। हर बच्चे को आगे आकर 'आज का विचार' या किसी थीम पर आधारित विचार को कहने/ पढ़ने का मौक़ा दिया जाता है।

मध्याह्न भोजन के लिए साथ में बैठना

मध्याह्न भोजन के लिए शिक्षक और बच्चे साथ में बैठते हैं और उस वक़्त बच्चों के जीवन के मसलों के बारे में बात करते हैं। ऐसा करने से बच्चे शिक्षकों के साथ सहज महसूस करने लगते हैं और उन्हें भरोसा हो जाता है कि हम भी उन्हीं की तरह हैं। स्कूल में रसोइयों और लड़कियों के साथ, लड़के भी भोजन परोसने की ज़िम्मेदारी उठाते हैं। स्कूल के सभी कामों जैसे कि

झाड़ू लगाना, कक्षा को सजाना, टेबल-कुर्सियाँ उठाना, सफ़ाई रखना, बाग़वानी, इत्यादि में सभी बच्चों और शिक्षकों की समान भागीदारी सुनिश्चित की जाती है।

कक्षा की बैठक व्यवस्था में परिवर्तन

हमें लगा कि बच्चों की पंक्तियों की सामान्य बैठक व्यवस्था में हम हर एक विद्यार्थी तक व्यक्तिगत रूप से नहीं पहुँच पा रहे थे। इस वजह से कुछ विद्यार्थी सभी गतिविधियों में हिस्सा नहीं ले पा रहे थे। हमने एक नई बैठक व्यवस्था अपनाकर देखने का निर्णय लिया, यह सोचते हुए कि अगर यह प्रभावी साबित नहीं हुई तो हम पहले वाली व्यवस्था पर लौट जाएँगे। नई बैठक व्यवस्था एक अर्ध गोले के आकार में थी और बच्चों को ख़ूब पसन्द आई। यह कारगर इसलिए साबित हुई क्योंकि हर बच्चे तक पहुँचना आसान हो गया था और सामूहिक गतिविधियों के लिए कक्षा के बीच में काफ़ी जगह थी। हम अब कक्षा में ही अपना भोजन मिल-बाँटकर खाते हैं और भिन्न-भिन्न गतिविधियों में हिस्सा लेते हैं।

बच्चों का कोना

वैसे तो पूरा स्कूल बच्चों का है, लेकिन उनका सारा काम और रचनाएँ उनकी कॉपियों के अन्दर उनके बस्तों में छिपी रहती हैं। हर बच्चे का एक विशेष हुनर होता है, जिसका प्रदर्शन करना बड़ा ज़रूरी होता है। इसलिए हमने हर कक्षा में एक बच्चों का कोना बनाने के बारे में सोचा। इस गतिविधि के लिए हमने कक्षा में ब्लैकबोर्ड के नीचे वाली दीवार को चुना। हर बच्चा अपना प्रोजेक्ट कार्य या अपनी रचनाएँ उस दीवार पर लटका सकता है। पूरी कक्षा के सामने अपनी रचनाएँ प्रदर्शित कर बच्चों को विशेष होने की अनुभूति होती है। इससे उन्हें और ज़्यादा नई और कल्पनाशील चीज़ें करने का प्रोत्साहन भी मिलता है। बच्चे अपने इस 'विशेष' कोने से बेहद ख़ुश हैं।

स्कूल की सजावट में भागीदारी

स्कूल को रंगने के कार्य के दौरान हमनें अद्भुत समय बिताया और हमें कई सारे सवालों के जवाब भी मिले। इस कार्य में बच्चों के साथ ही गाँववासियों ने भी हमारे प्रयासों की सराहना करके तथा मदद का प्रस्ताव देकर इस कार्य में पूरी तरह हिस्सा लिया। कक्षा-5 के एक विद्यार्थी ने दीवार को रंगते हुए पूछा, "मैम, हम स्कूल को इतनी ज़ोरों से ख़ूबसूरत बनाने के प्रयास में लगे हैं, पर हमारे जाने के बाद ये सब कौन करेगा?" जब उसने यह पूछा, तो मैं उसकी आँखों में इस संस्थान के लिए प्यार और अपनत्व देख पा रही थी।

अभिभावकों की बैठकों का आयोजन

हमें यह एहसास हुआ कि विद्यार्थियों के माता-पिता और शिक्षकों के बीच कोई सम्पर्क स्थापित नहीं हुआ है, जिसके कारण हमारे पास बच्चों के रोज़ के जीवन, उनकी आदतों, समस्याओं या घर की परिस्थितियों की कोई जानकारी नहीं थी। इसी तरह अभिभावक भी अपने बच्चों के विकास और स्कूल की गतिविधियों को लेकर अँधेरे में थे। इसे ध्यान में रखते हुए हमने तीसरी से पाँचवी तक के विद्यार्थियों के माता-पिता के लिए एक शिक्षक-अभिभावक मीटिंग रखने का फ़ैसला किया। इस मीटिंग में बड़ी संख्या में अभिभावकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की; अपनी चिन्ताएँ साझा कीं और उपयोगी सुझाव भी दिए। हमने उन्हें अर्धवार्षिक परीक्षाओं की जँची हुई उत्तर पुस्तिकाएँ भी दिखाईं। अपने बच्चों के विकास के लिए उनसे उनका सहयोग भी माँगा गया। नवोदय विद्यालय पर एक चर्चा हुई और उसके फ़ायदे भी समझाए गए।

इससे पहले, बच्चों के माता-पिता कभी ऐसी बैठक में शामिल नहीं हुए थे। इस बैठक में भी सारे अभिभावक नहीं आए थे। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि उन्होंने अपने बच्चों से जुड़े हुए ज़रूरी मसलों पर पहले कभी चर्चा ही नहीं की थी। इसके बावजूद, वहाँ मौजूद हर एक अभिभावक ने चर्चा में हिस्सा लिया। कुछ बच्चों की नानी-दादी आई थीं; वे ख़ुद औपचारिक रूप से शिक्षित नहीं थीं पर अपने बच्चों के भविष्य की चिन्ता करते हुए उन्होंने हमें बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के निर्देश भी दिए, जो कि हमारे लिए एक बहुत सकारात्मक अनुभव था।

अभिभावकों से घर पर मिलना

कुछ बच्चे ऐसे हैं जो स्कूल से निरन्तर अनुपस्थित रहते हैं और उनके माता-पिता बैठक में भी नहीं आए थे, इसलिए हमारा उनसे मिलना बड़ा आवश्यक था। हमने उनके घर जाकर उनसे मिलना तय किया। और भी कारण थे, जैसे, हमने पाँचवी कक्षा के एक मेधावी बच्चे में अचानक कुछ बदलाव देखा, जो कि कक्षा व स्कूल की हर गतिविधि में हमेशा सबसे आगे रहता था, चाहे पढ़ाई हो या कोई और काम। वह उदास और चिड़चिड़ा हो गया। वह किसी भी गतिविधि में हिस्सा नहीं लेना चाहता था। हमने उसके दोस्तों से पूछा, पर कुछ पता नहीं चला। उसने नवोदय विद्यालय का फ़ॉर्म भरने से भी इन्कार कर दिया था। कक्षा में भी नहीं आना चाहता था। जब हम उसके घर गए और उसकी माँ से मिले तो हमें पता चला कि उसके घर में लगातार होने वाले लड़ाई-झगड़ों की वजह से वह

मानसिक और भावनात्मक रूप से प्रभावित हो रहा था। उसके अभिभावक से बात करके हम उन्हें यह बात समझाई। इससे कुछ हद तक मदद मिली और अब वह बच्चा धीरे-धीरे अपने पहले वाले अन्दाज़ में वापस आ रहा है।

सारे धर्मों के त्योहार मनाना

इस गतिविधि का मुख्य कारण यह था कि बच्चों को अन्य धर्मों के बारे में कुछ भी नहीं पता था। जिन्हें अन्य धर्मों के बारे में थोड़ा-बहुत पता भी था, वे भी उन धर्मों का सम्मान नहीं करते थे, इसलिए यह गतिविधि करना अत्यन्त आवश्यक था।

हमने शुरुआत क्रिसमस मनाकर की। हमने पहले विद्यार्थियों से पूछा कि वे क्रिसमस के बारे में क्या जानते हैं और फिर इस बारे में बात की कि यह त्योहार आख़िर क्यों मनाया जाता है। इस गतिविधि के दौरान हमें पता चला कि कुछ बच्चे इसमें हिस्सा लेने में हिचकिचा रहे थे। इसका कारण यह था कि जो बातें उन्होंने सुनी हुई थीं, उन्होंने उनके दिमाग़ों में उनके अपने धर्म के अलावा बाक़ी सभी धर्मों के विरुद्ध पूर्वाग्रह बना दिए थे। एक लम्बी बातचीत के बाद हम उनकी कुछ ग़लतफ़हमियों को दूर कर पाए और फिर सारे बच्चों ने क्रिसमस वाली टोपियाँ बनाईं और बढ़िया समय व्यतीत किया।

ये कुछ छोटे तरीक़े हैं जिनके द्वारा हमारी स्कूल टीम (शिक्षक और बच्चे), अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के सदस्यों के साथ हमारे स्कूल को समावेशी बनाने की कोशिश में जुटी है।

सन्ध्या देवी शासकीय प्राथमिक विद्यालय, गीधा (जांजगीर ज़िला, छत्तीसगढ़) में पढ़ाती हैं। वे 2013 से अध्यापन के पेशे में हैं। उनके पास अँग्रेज़ी में स्नातकोत्तर डिग्री है और उनकी रुचि प्राथमिक कक्षाओं को गणित पढ़ाने में है। उन्हें गाने में आनन्द आता है। उनसे *sandhyadevi1986@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : आदर्श मोदी **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय